चम्पारण ज्ञानाग्रह

प्रार्थना-सभा सामग्री, दिनांक– 29 अगस्त 2026, अंक –345.

प्रस्तुति:- GOVT. PS बोदसर, बगहा-2, प. चम्पारण (10010803702)

सौजन्य :- "TEACHERS OF BIHAR - THE CHANGE MAKERS."

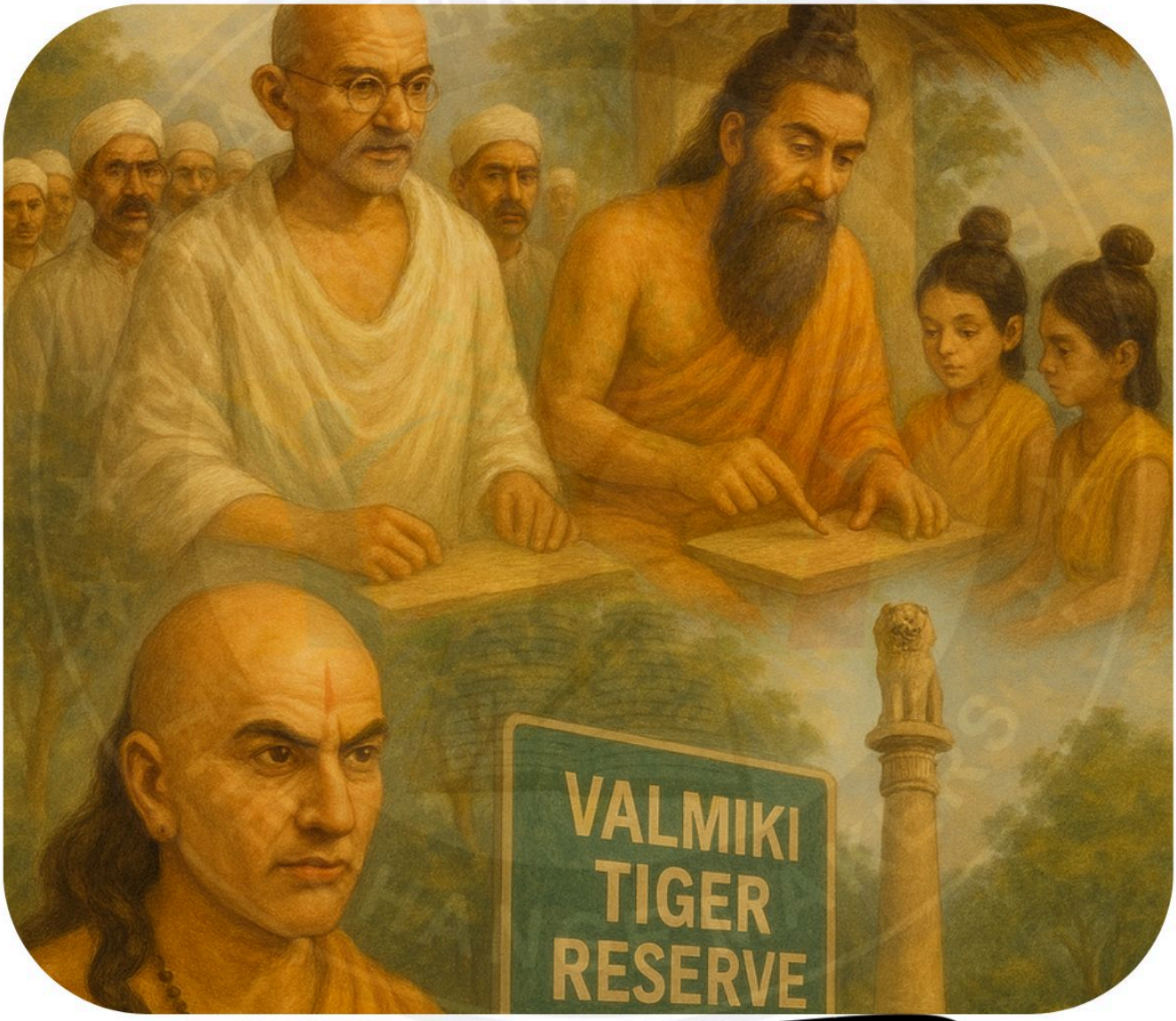

"साक्षर होना और शिक्षित होना दो अलग बातें हैं।"

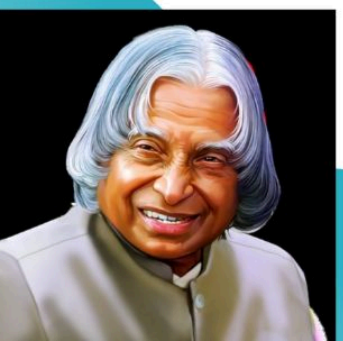

विद्यार्थियों की बौद्धिक और नैतिक उन्नति की ओर....

संपादक:- शैलेन्द्र कुमार

अनुभाग-1

"प्रार्थना-सभा सामग्री"

Saturday Prayer

बिहार राज्य प्रार्थना

मेरी रफ्तार पे सूरज की किरण नाज करे,
ऐसी परवाज दे मालिक कि गगन नाज करे।

वो नजर दे कि करूँ कद्र हरेक मजहब की,
वो मुहब्बत दे मुझे अमनो अमन नाज करे।

मेरी खुशबू से महक जाये ये दुनिया मालिक,
मुझको वो फूल बना सारा चमन नाज करे।

इल्म कुछ ऐसा दे मैं काम सबों के आऊँ,
हौसला ऐसा हीं दे गंग जमन नाज करे।

आधे रस्ते पे न रूक जाये मुसाफिर के कदम,
शौक मंजिल का हो इतना कि थकन नाज करे।

दीप से दीप जलायें कि चमक उठे बिहार,
ऐसी खूबी दे ऐ मालिक कि वतन नाज करे।

जय बिहार जय बिहार जय जय जय जय बिहार...!

बिहार राज्य गीत

मेरे भारत के कंठहार ,
तुझको शत-शत वंदन बिहार..!

तू वाल्मीकि की रामायण
तू वैशाली का लोकतंत्र,
तू बोधिसत्व की करूणा है
तू महावीर का शांतिमंत्र
तू नालंदा का ज्ञानदीप
तू हीं अक्षत चंदन बिहार

तू है अशोक की धर्मध्वजा
तू गुरूगोविंद की वाणी है
तू आर्यभट्ट तू शेरशाह
तू कुंवर सिंह बलिदानी है
तू बापू की है कर्मभूमि
धरती का नंदन वन बिहार।

तेरी गौरव गाथा अपूर्व
तू विश्व शांति का अग्रदूत
लौटेगा खोया स्वाभिमान
अब जाग चुके तेरे सपूत
अब तू माथे का विजय तिलक
तू आँखों का अंजन बिहार
तुझको शत-शत वंदन बिहार
मेरे भारत के कंठहार ॥

राष्ट्रीय गीत (190 सेकंड)

वन्दे मातरम्।
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्,
शस्यश्यामलां मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
शुभ्रज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्,
सुखदां वरदां मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
कोटि-कोटि कण्ठ कलकल निनाद कराले,
कोटि-कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले,
अबला केनो मा एतो बले?
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीं,
रिपुदलवारिणीं मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
त्वं हि विद्या, त्वं हि धर्म,
त्वं हि हृदि, त्वं हि मर्म,
त्वं हि प्राणाः शरीरे।
बाहुते त्वं मा शक्ति,
हृदये त्वं मा भक्ति,
तोमारइ प्रतिमा गढ़ि
मन्दिरे-मन्दिरे।
वन्दे मातरम्॥
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी नमामि त्वाम्।
नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्,
सुजलां सुफलां मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्,
धरणीं भरणीं मातरम्।
वन्दे मातरम्॥

राष्ट्रगान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंधु-गुजरात-मराठा
द्रविड़-उत्कल-बंग।
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा
उच्छल-जलधि-तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय-गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।।

संकलन:-
शैलेन्द्र कुमार
प्रधान शिक्षक
Govt. PS बोदसर,
बगहा-2, प. चंपारण।

संविधान की प्रस्तावना

हम, भारत के लोग,
भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को: सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए, तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता एवं अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई० (मिति मार्ग शीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

मौलिक अधिकार

1. "समता का अधिकार (Right to Equality.)" - अनुच्छेद 14–18
2. "स्वतंत्रता का अधिकार - (Right to Freedom.)" - अनुच्छेद 19–22
3. "शोषण के विरुद्ध अधिकार (Right against Exploitation.)" - अनुच्छेद 23–24
4. "धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार (Right to Freedom of Religion.)" - अनुच्छेद 25–28
5. "संस्कृति एवं शिक्षा संबंधी अधिकार (Cultural and Educational Right.)" - अनुच्छेद 29–30
6. "संवैधानिक उपचारों का अधिकार (Right to Constitutional Remedies.)" - अनुच्छेद 32

मौलिक कर्तव्य

अनुच्छेद 51(क) – मौलिक कर्तव्य:
भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –
(1.) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;
(2.) स्वतन्त्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;
(3.) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;
(4.) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;
(5.) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो; ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;
(6.) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;
(7.) प्राकृतिक पर्यावरण, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, की रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;
(8.) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;
(9.) सार्वजनिक सम्पत्ति की रक्षा करे और हिंसा से दूर रहे;
(10.) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्नों द्वारा उन्नति की नई ऊँचाइयों को छू ले;
(11.) यदि वह माता-पिता या संरक्षक है, तो छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बच्चे या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

वर्ग:- प्राथमिक (1 - 5) के लिए

सामान्य-ज्ञान

प्रश्न 1. मेक्सिको की राजधानी क्या है?
उत्तर: मेक्सिको सिटी
प्रश्न 2. भारत की पहली महिला पर्वतारोही जिन्होंने एवरेस्ट के बाद अंटार्कटिका की चोटी भी फतह की, कौन थीं?
उत्तर: संतोष यादव
प्रश्न 3. 'करगट्टम' किस राज्य की प्रसिद्ध लोकनृत्य परंपरा है?
उत्तर: तमिलनाडु
प्रश्न 4. 15/1000 को दशमलव में लिखिए।
उत्तर: 0.015
प्रश्न 5. बिहार का 'राजा विशाल का गढ़' किस जिले में स्थित है?
उत्तर: वैशाली
प्रश्न 6. पेड़ों की पत्तियों से जल के बाहर निकलने की प्रक्रिया क्या कहलाती है?
उत्तर: वाष्पोत्सर्जन ◆
NCERT
प्रश्न 7. डायनामाइट का आविष्कार किसने किया था?
उत्तर: अल्फ्रेड नोबेल
प्रश्न 8. भारत में सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना किस वर्ष हुई थी?
उत्तर: 1950
प्रश्न 9. 'कम बोलने वाला' व्यक्ति कहलाता है—इसके लिए एक शब्द क्या है?
उत्तर: मितभाषी
प्रश्न 10. पृथ्वी पर दिन और रात होने का मुख्य कारण क्या है?
उत्तर: घूर्णन

संकलन:-

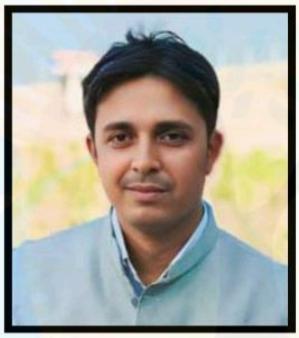

पिन्टू कुमार
विद्यालय अध्यापक
UHS रामपुर, बगहा-2

शब्द - संगम

Seedling – (सीडलिंग) – अंकुरित पौधा
Stem – (स्टेम) – तना
Leaflet – (लीफलेट) – छोटी पत्ती
Petiole – (पेटिओल) – पत्ती की डंठल
Sepal – (सेपल) – बाह्यदल
Stamen – (स्टेमन) – पुंकेसर
Pistil – (पिस्टिल) – स्त्रीकेसर

संकलन:-
सौरभ कुमार
विद्यालय अध्यापक
Govt. UMS गोइती
बगहा-2, प. चम्पारण

English गप-शप

थीम: Simple Future Tense – "कितने समय तक ... करोगे/करोगी?" (How long will you ...?)

तुम कितने समय तक पढ़ोगे/पढ़ोगी? – How long will you study?
तुम कितने समय तक खेलोगे/खेलोगी? – How long will you play?
तुम कितने समय तक इंतज़ार करोगे/करोगी? – How long will you wait?
तुम कितने समय तक वहाँ रहोगे/रहोगी? – How long will you stay there?
तुम कितने समय तक काम करोगे/करोगी? – How long will you work?

संकलन:-
अभिनव राज
प्रधान शिक्षक
रा० प्रा० वि० शेखधुरवा
चनपटिया, प. चम्पारण।

"सामान्य-ज्ञान"(वर्ग:6-12)

प्र.1. प्रतिवर्ष 29 अगस्त को भारत में 'राष्ट्रीय खेल दिवस' (National Sports Day) किस महान खिलाड़ी की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है? (महत्वपूर्ण दिवस)

उत्तर: मेजर ध्यानचंद ('हॉकी के जादूगर')

व्याख्या: भारत में प्रतिवर्ष 29 अगस्त को 'राष्ट्रीय खेल दिवस' महान भारतीय हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद (29 अगस्त 1905 – 3 दिसंबर 1979) की जयंती के सम्मान में मनाया जाता है। ध्यानचंद जी ने 1928 (एम्स्टर्डम), 1932 (लॉस एंजिल्स) और 1936 (बर्लिन) के लगातार तीन ओलंपिक खेलों में भारत को स्वर्ण पदक दिलाने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई थी। अपने अंतरराष्ट्रीय करियर में 400 से अधिक गोल करने वाले इस महान खिलाड़ी को 'हॉकी का जादूगर' कहा जाता है। इस अवसर पर भारत के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में खिलाड़ियों को मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार, अर्जुन पुरस्कार और द्रोणाचार्य पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

संदर्भ: Ministry of Youth Affairs and Sports Official Portal; NCERT Physical Education and Health Class 11;

प्र.2. अगस्त 2026 में भारत के 'राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन' (National Green Hydrogen Mission) के अंतर्गत पहले वाणिज्यिक ग्रीन हाइड्रोजन ईंधन-सेल बस कॉरिडोर का परिचालन किस राज्य/यूटी में प्रारंभ किया गया? (समसामयिक घटना)

उत्तर: लद्दाख (लेह-लद्दाख)

व्याख्या: अगस्त 2026 में भारत सरकार के नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय तथा एनटीपीसी (NTPC) द्वारा लद्दाख के लेह में शून्य से नीचे तापमान और अत्यधिक ऊंचाई पर संचालित होने वाली देश की पहली वाणिज्यिक ग्रीन हाइड्रोजन मोबिलिटी परियोजना को सफलतापूर्वक शुरू किया गया। इसके तहत सौर ऊर्जा से जल के इलेक्ट्रोलिसिस द्वारा उत्पादित शुद्ध हाइड्रोजन गैस से चलने वाली 5 फ्यूल-सेल बसों को सार्वजनिक परिवहन में उतारा गया। यह मिशन भारत को 2030 तक 5 मिलियन मीट्रिक टन ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन और 2070 तक 'नेट-जीरो' कार्बन उत्सर्जन लक्ष्य हासिल करने में सक्षम बनाएगा।

संदर्भ: Ministry of New and Renewable Energy (MNRE) Annual Report August 2026; NTPC Green Mobility Dossier;

प्र.3. भारतीय राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा वर्ष 1909 में गुजराती भाषा में रचित वह प्रसिद्ध मौलिक पुस्तक कौन-सी है, जिसमें 'स्वराज' और आधुनिक सभ्यता की आलोचना की विस्तृत व्याख्या की गई है? (पुस्तक एवं लेखक)

उत्तर: हिंद स्वराज (Indian Home Rule)

व्याख्या: 'हिंद स्वराज' की रचना महात्मा गांधी ने 1909 में लंदन से दक्षिण अफ्रीका की समुद्री यात्रा के दौरान जहाज 'एस.एस. किल्डोनन कैसल' पर की थी। संवाद शैली (पाठक और संपादक के बीच प्रश्नोत्तर) में लिखी गई यह पुस्तक गांधीवादी दर्शन की आधारशिला मानी जाती है। इसमें गांधी जी ने पश्चिमी भौतिकवादी औद्योगिकीकरण, मशीनीकरण, ब्रिटिश संसदीय प्रणाली और आधुनिक संस्थाओं की तीखी आलोचना करते हुए 'आत्म-नियंत्रण', 'सत्याग्रह' और 'नैतिक स्वराज' का सिद्धांत प्रतिपादित किया। इसे ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रतिबंधित भी किया गया था।

संदर्भ: महात्मा गांधी — 'हिंद स्वराज', नवजीवन प्रकाशन मंदिर; NCERT History Class 10 (भारत और समकालीन विश्व-2), Ch 2 "भारत में राष्ट्रवाद", p. 32–35.

प्र.4. पृथ्वी के वायुमंडल में हरितगृह प्रभाव (Greenhouse Effect) उत्पन्न करने वाली सर्वाधिक प्रभावशाली गैस कौन-सी है और 1997 में इसे कम करने हेतु कौन-सा वैश्विक समझौता हुआ था? (पर्यावरण/ग्लोबल वॉर्मिंग)

उत्तर: कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2); क्योटो प्रोटोकॉल (1997)

व्याख्या: हरितगृह गैसें (Greenhouse Gases) जैसे कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2), मीथेन (CH_4), नाइट्रस ऑक्साइड (N_2O) और जलवाष्प पृथ्वी द्वारा उत्सर्जित दीर्घ-तरंग अवरक्त विकिरणों (Infrared Radiation) को अवशोषित कर वायुमंडल को गर्म रखती हैं। औद्योगीकरण एवं जीवाश्म ईंधनों के दहन से CO_2 के स्तर में तीव्र वृद्धि हुई है, जो ग्लोबल वॉर्मिंग और जलवायु परिवर्तन का मुख्य कारण है। इस वैश्विक संकट को रोकने हेतु 11 दिसंबर 1997 को जापान के क्योटो में 'क्योटो प्रोटोकॉल' अपनाया गया, जिसने विकसित देशों पर बाध्यकारी ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन कटौती लक्ष्य निर्धारित किए थे।

संदर्भ: NCERT Science Class 10, Ch 15 "हमारा पर्यावरण", p. 260–265;

प्र.5. 12 मार्च 1930 को महात्मा गांधी ने ब्रिटिश सरकार के किस अन्यायपूर्ण कानून के विरुद्ध साबरमती आश्रम से दांडी तक अपनी ऐतिहासिक 240 मील की पदयात्रा प्रारंभ की थी? (इतिहास)

उत्तर: नमक कानून (नमक सत्याग्रह / दांडी मार्च)

व्याख्या: महात्मा गांधी ने 12 मार्च 1930 को अपने 78 चुने हुए आश्रम सहयोगियों के साथ अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से गुजरात के तटीय गाँव दांडी तक 240 मील की 24-दिवसीय ऐतिहासिक यात्रा शुरू की। 6 अप्रैल 1930 को दांडी के समुद्र तट पर प्राकृतिक नमक बनाकर उन्होंने ब्रिटिश सरकार के नमक एकाधिकार और नमक कर कानून को तोड़ा। यह घटना भारत में 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' (Civil Disobedience Movement) की औपचारिक शुरुआत थी, जिसने देश भर में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, कर-अदायगी बंदी और महिलाओं की विशाल जन-भागीदारी को प्रेरित किया।

संदर्भ: NCERT History Class 10 (भारत और समकालीन विश्व-2), Ch 2 "भारत में राष्ट्रवाद", p. 38–42; NCERT History Class 12 (Themes in Indian History Part-3), Ch 13 Mahatma Gandhi and Nationalist Movement, p. 350–355.

"सामान्य-ज्ञान"

प्र.6. 23°30' उत्तरी अक्षांश रेखा, जिसे 'कर्क रेखा' (Tropic of Cancer) कहा जाता है, भारत के कुल कितने राज्यों से होकर गुजरती है? (भूगोल)
उत्तर: 8 राज्य (गुजरात, राजस्थान, म.प्र., छत्तीसगढ़, झारखंड, प. बंगाल, त्रिपुरा, मिजोरम)
व्याख्या: कर्क रेखा (23^\circ 30'\text{ N}) भारत को लगभग दो समान भागों — उत्तरी उपोष्णकटिबंधीय और दक्षिणी उष्णकटिबंधीय कटिबंधों में विभाजित करती है। यह रेखा पश्चिम से पूर्व की ओर भारत के कुल 8 राज्यों से गुजरती है: (1) गुजरात, (2) राजस्थान, (3) मध्य प्रदेश, (4) छत्तीसगढ़, (5) झारखंड, (6) पश्चिम बंगाल, (7) त्रिपुरा और (8) मिजोरम। झारखंड की राजधानी रांची इस रेखा के बिल्कुल समीप स्थित है। यह रेखा भारत के तापमान, मानसूनी वर्षा के वितरण और वनस्पति के स्वरूप को गहरे रूप से प्रभावित करती है।
संदर्भ: NCERT Geography Class 9 (समकालीन भारत-1), Ch 1 "भारत - आकार और स्थिति", p. 1–4;

प्र.7. भारतीय संविधान का कौन-सा अनुच्छेद देश के प्रत्येक नागरिक को 'प्राण और दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण' (Protection of Life and Personal Liberty) प्रदान करता है? (राजनीति एवं संविधान)
उत्तर: अनुच्छेद 21 (Article 21)
व्याख्या: भारतीय संविधान के भाग-III में वर्णित अनुच्छेद 21 घोषित करता है कि "विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अतिरिक्त किसी भी व्यक्ति को उसके जीवन या व्यक्तिगत स्वतंत्रता से वंचित नहीं किया जाएगा।" सर्वोच्च न्यायालय ने 'मेनका गांधी बनाम भारत संघ' (1978) और 'पुट्टास्वामी निर्णय' (2017) में इसकी व्यापक व्याख्या करते हुए गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार, निजता का अधिकार (Right to Privacy), स्वच्छ पर्यावरण का अधिकार, आजीविका का अधिकार और प्राथमिक शिक्षा के अधिकार (अनुच्छेद 21A) को इसके अंतर्गत मौलिक अधिकार माना है।
संदर्भ: Constitution of India, Part III, Article 21; NCERT Political Science Class 11 (भारत का संविधान: सिद्धांत और व्यवहार), Ch 2 "भारतीय संविधान में अधिकार", p. 36–39; UPSC GS-II Polity Reference.

प्र.8. दृष्टि के किस दोष में व्यक्ति को निकट की वस्तुएं तो स्पष्ट दिखाई देती हैं किंतु दूर की वस्तुएं धुंधली दिखाई देती हैं, और इसके निवारण हेतु किस लेंस का उपयोग किया जाता है? (विज्ञान)
उत्तर: निकट-दृष्टि दोष (Myopia); अवतल लेंस (Concave Lens)
व्याख्या: 'निकट-दृष्टि दोष' (Myopia) में व्यक्ति निकट रखी वस्तुओं को तो स्पष्ट देख सकता है, परंतु दूर स्थित वस्तुओं का प्रतिबिंब रेटिना के आगे (Front of Retina) बन जाने के कारण दूर की वस्तुएं स्पष्ट नहीं दिखतीं। इसके मुख्य कारण हैं: (1) अभिनेत्र लेंस की वक्रता का अत्यधिक होना, तथा (2) नेत्र गोलक का लंबा हो जाना। इस दोष के निवारण हेतु उपयुक्त फोकस दूरी वाले 'अवतल लेंस' (Diverging/Concave Lens) का उपयोग किया जाता है, जो दूर से आने वाली समानांतर प्रकाश किरणों को अपसारित कर पुनः ठीक रेटिना पर केंद्रित कर देता है।
संदर्भ: NCERT Science Class 10, Ch 11 "मानव नेत्र तथा रंगबिरंगा संसार", p. 210–212;

प्र.9. बिहार के मिथिलांचल क्षेत्र में प्राकृतिक रंगों, बांस की तीलियों और अंगुलियों से बनाई जाने वाली वह कौन-सी विश्वविख्यात लोक चित्रकला है जिसे GI टैग प्राप्त है? (कला एवं संस्कृति)
उत्तर: मधुबनी चित्रकला (मिथिला पेंटिंग)
व्याख्या: मधुबनी चित्रकला बिहार के मिथिला क्षेत्र (मधुबनी, दरभंगा, सहरसा, सीतामढ़ी) की एक अत्यंत प्राचीन और समृद्ध पारंपरिक लोक कला है। इसे पारंपरिक रूप से महिलाओं द्वारा घरों की लिपी-पुती भित्तियों और आँगन में प्राकृतिक रंगों (चावल का घोल, नील, हल्दी, फूलों व पत्तियों के रस) से बनाया जाता है। इसमें मुख्य रूप से दो शैलियाँ होती हैं: (1) भित्ति चित्र (कोहबर और गोसाईं घर) और (2) अरिपन (भूमि अलंकरण)। इसमें भगवान राम-सीता, राधा-कृष्ण, सूर्य, चंद्रमा, तुलसी और मछली के प्रतीकात्मक चित्र बनाए जाते हैं। जगदंबा देवी, सीता देवी, महासुंदरी देवी और दुलारी देवी को इस कला के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया जा चुका है।
संदर्भ: NCERT Class 11 Fine Arts (An Introduction to Indian Art Part-1), Ch 10 "Folk and Tribal Art", p. 145–148;

प्र.10. बिहार के जहानाबाद जिले में स्थित मौर्य सम्राट अशोक एवं उनके पौत्र दशरथ द्वारा आजीवक संप्रदाय के भिक्षुओं को दान में दी गई भारत की प्राचीनतम शैलकृत गुफाएं कौन-सी हैं? (बिहार सामान्य ज्ञान)
उत्तर: बराबर की गुफाएं (Barabar Caves)
व्याख्या: बराबर की गुफाएं (Barabar Caves) बिहार के जहानाबाद जिले के मखदुमपुर प्रखंड में स्थित प्राचीन शैलकृत (Rock-cut) गुफाओं का समूह हैं, जिनका निर्माण मौर्य सम्राट अशोक (तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व) और उनके पौत्र दशरथ ने 'आजीवक संप्रदाय' के तपस्वियों के आवास हेतु करवाया था। इन गुफाओं में 'कर्ण चौपार', 'सुदामा गुफा', 'लोमश ऋषि गुफा' और 'विश्व झोपड़ी' प्रमुख हैं। इनकी मुख्य विशेषता ग्रेनाइट चट्टानों को तराशकर बनाई गई अद्भुत आंतरिक कांच जैसी शीशेदार पॉलिश (Mauryan Mirror Polish) और मेहराबदार प्रवेश द्वार हैं, जो भारत में गुहा स्थापत्य कला के प्रारंभिक और श्रेष्ठतम उदाहरण हैं।
संदर्भ: NCERT History Class 6 (हमारे अतीत-1), Ch 7 "अशोक: एक अनोखा सम्राट", p. 72;

"सामान्य-ज्ञान"

प्र.11. 'मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम' (सुरक्षित शनिवार: अगस्त W4 — नाव दुर्घटना एवं पानी में डूबने से बचाव) के अनुसार बाढ़ और नदी पार करते समय नाव संचालकों एवं यात्रियों को किन 3 प्रमुख सुरक्षा नियमों का कड़ाई से पालन करना चाहिए? (विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम)

उत्तर: क्षमता से अधिक न बैठना, लाइफ जैकेट पहनना, खराब मौसम में नाव न चलाना

व्याख्या: बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (BSDMA) के 'सुरक्षित शनिवार' कैलेंडर (अगस्त W4) और राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) के दिशानिर्देशों के अनुसार, नाव दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए 3 आधारभूत जीवन-रक्षक नियम अनिवार्य हैं: (1) नाव की निर्धारित भार वहन क्षमता (Overloading) का कभी भी उल्लंघन न करें और मवेशी व भारी माल के साथ यात्रियों को न बैठाएं; (2) प्रत्येक यात्री और नाव चालक यात्रा से पूर्व अनिवार्य रूप से लाइफ जैकेट या फ्लोटिंग उपकरण पहनें; (3) तेज हवा, भारी वर्षा, आंधी-तूफान या रात के अंधेरे में नाव का संचालन पूरी तरह वर्जित रखें। नाव पर कभी भी एक किनारे खड़े होकर संतुलन न बिगाड़ें।

संदर्भ: बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (BSDMA) सुरक्षित शनिवार प्रशिक्षण मॉड्यूल (अगस्त W4);

प्र.12. किसी कार्य को A अकेले 12 दिनों में तथा B अकेले 24 दिनों में पूरा कर सकता है। यदि दोनों एक साथ मिलकर कार्य करें, तो वह पूरा कार्य कितने दिनों में समाप्त हो जाएगा? (रोचक पहेली/गणित/रीज़निंग)

उत्तर: 8 दिन

व्याख्या: यह 'समय एवं कार्य' (Time and Work) की मानक गणितीय अवधारणा पर आधारित है।

A का 1 दिन का कार्य = $\frac{1}{12}$

B का 1 दिन का कार्य = $\frac{1}{24}$

दोनों का एक साथ 1 दिन का कुल कार्य = $\frac{1}{12} + \frac{1}{24} = \frac{2 + 1}{24} = \frac{3}{24} = \frac{1}{8}$

चूँकि दोनों मिलकर प्रतिदिन कार्य का $\frac{1}{8}$ भाग पूरा करते हैं, अतः पूरा कार्य समाप्त होने में लगने वाला कुल समय = $\frac{1}{1/8} = 8\text{ दिन}$ होगा।

GS संकलन:-
शैलेन्द्र कुमार
प्रधान शिक्षक
Govt. PS बोदसर
बगहा-2, प. चम्पारण।

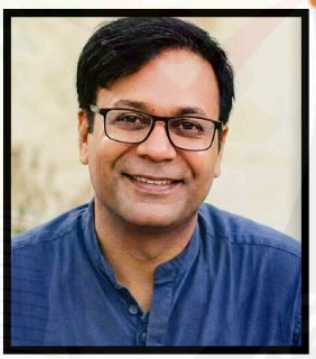

अनुभाग-4

-: शब्द - संगम :-

Austere (ऑस्टियर) = Severe (सिवियर) = कठोर / सादा / संयमित
Antonym – Indulgent (इन्डल्जेन्ट) = उदार / छूट देने वाला
Blandish (ब्लैंडिश) = Flatter (फ्लैटर) = चापलूसी करके मनाना
Antonym – Insult (इन्सल्ट) = अपमान करना
Circumspect (सर्कम्स्पेक्ट) = Cautious (कॉशस) = सावधान / विवेकपूर्ण
Antonym – Reckless (रेकलेस) = लापरवाह / उतावला
Diatribe (डायट्राइब) = Tirade (टाइरेड) = तीखी आलोचना / कटु भाषण
Antonym – Praise (प्रेज़) = प्रशंसा
Eloquent (एलोक्वेन्ट) = Fluent (फ्लूएंट) = वाक्पटु / प्रभावशाली ढंग से बोलने वाला
Antonym – Inarticulate (इनआर्टिक्युलेट) = अवाक् / अपनी बात स्पष्ट न कह पाने वाला

~: संकलन :~
राकेश कुमार राव
प्रधानाध्यापक
PMश्री +2 NGY उच्च विद्यालय
वाल्मीकिनगर, बगहा-2 , प. चम्पारण।

"आज का अख़बार"

NATIONAL NEWS

English Headline: Ministry of Mines and GSI Implement 'National Critical Minerals Recovery Framework' for Domestic Rare Earth Supply Chain.
हिन्दी अनुवाद: खान मंत्रालय और जीएसआई ने घरेलू दुर्लभ पृथ्वी आपूर्ति श्रृंखला के लिए 'राष्ट्रीय महत्वपूर्ण खनिज पुनरुद्धार ढांचा' लागू किया।
भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI) के नेतृत्व में लिथियम, टाइटेनियम, निकेल और कोबाल्ट जैसे सामरिक खनिजों के नए भंडारों के अन्वेषण और उनके सतत दोहन के लिए एक व्यापक तकनीकी गाइडलाइन जारी की गई है। यह कदम देश की स्वच्छ ऊर्जा संक्रमण और सेमीकंडक्टर निर्माण आत्मनिर्भरता को गति प्रदान करेगा।

English Headline: ISRO Successfully Conducts Integrated Dynamic Environmental Testing for Next-Generation Launch Vehicle (NGLV) Modules.
हिन्दी अनुवाद: इसरो ने अगली पीढ़ी के प्रक्षेपण वाहन (NGLV) मॉड्यूल के लिए एकीकृत गतिशील पर्यावरण परीक्षण सफलतापूर्वक पूरा किया।
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने भविष्य के भारी अंतरिक्ष अभियानों और आगामी भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (BAS) के प्रक्षेपण हेतु तैयार किए जा रहे एनजीएलवी (NGLV) रॉकेट घटकों का सफल कंपन एवं संरचनात्मक परीक्षण किया। यह विकास भारत की भारी पेलोड कक्षा-प्रक्षेपण क्षमता को मजबूती प्रदान करेगा।

English Headline: ISRO Successfully Conducts Integrated Dynamic Environmental Testing for Next-Generation Launch Vehicle (NGLV) Modules.
हिन्दी अनुवाद: इसरो ने अगली पीढ़ी के प्रक्षेपण वाहन (NGLV) मॉड्यूल के लिए एकीकृत गतिशील पर्यावरण परीक्षण सफलतापूर्वक पूरा किया।
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने भविष्य के भारी अंतरिक्ष अभियानों और आगामी भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (BAS) के प्रक्षेपण हेतु तैयार किए जा रहे एनजीएलवी (NGLV) रॉकेट घटकों का सफल कंपन एवं संरचनात्मक परीक्षण किया। यह विकास भारत की भारी पेलोड कक्षा-प्रक्षेपण क्षमता को मजबूती प्रदान करेगा।

INTERNATIONAL NEWS

English Headline: UN General Assembly Adopts Milestone Treaty on 'Responsible Global Governance and Transboundary Ethics for Autonomous AI'.
हिन्दी अनुवाद: संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 'स्वायत्त एआई के जिम्मेदार वैश्विक शासन और सीमा पार नैतिकता' पर ऐतिहासिक संधि को मंजूरी दी।
संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में आयोजित विशेष सत्र के दौरान सदस्य राष्ट्रों ने उन्नत कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के सुरक्षित, पारदर्शी और मानवीय नियंत्रण आधारित उपयोग के लिए कानूनी रूप से बाध्यकारी वैश्विक मानकों को स्वीकार किया। इसका उद्देश्य साइबर खतरों को कम करना और विकासशील देशों में डिजिटल डेटा संप्रभुता की रक्षा करना है।

English Headline: World Bank and Asian Development Bank Commit Joint $4.2 Billion Facility for South Asian Cross-Border Disaster Resilience.
हिन्दी अनुवाद: विश्व बैंक और एशियाई विकास बैंक ने दक्षिण एशियाई सीमा पार आपदा लचीलेपन के लिए संयुक्त $4.2 बिलियन की सुविधा की घोषणा की।
पड़ोसी हिमालयी क्षेत्रों और नदी घाटियों में हाल की प्राकृतिक आपदाओं और अचानक आई बाढ़ (Flash Floods) के प्रबंधन हेतु भारत, नेपाल और बांग्लादेश के सीमावर्ती बुनियादी ढांचे, प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों और नदी तटबंधों के आधुनिकीकरण के लिए यह बहुपक्षीय वित्तीय पैकेज स्वीकृत किया गया है।

English Headline: World Health Organization (WHO) Launches 'Global Vector and Zoonotic Genomics Surveillance Platform 5.3'.
हिन्दी अनुवाद: विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने 'ग्लोबल वेक्टर एवं जूनोटिक जीनोमिक्स निगरानी प्लेटफॉर्म 5.3' की शुरुआत की।
बदलते जलवायु चक्रों और अत्यधिक वर्षा के कारण उभरने वाले संक्रामक रोगों (डेंगू, मलेरिया, जीका) के नए म्यूटेशन की समय रहते पहचान के लिए डब्ल्यूएचओ ने इस उन्नत डिजिटल नेटवर्क का विस्तार किया है। यह प्लेटफॉर्म वास्तविक समय के डेटा विश्लेषण के आधार पर सदस्य देशों को पूर्व चेतावनी जारी करेगा।

BIHAR NEWS

English Headline: Bihar Cabinet Approves Comprehensive Master Plan for ₹70,000-Crore 126-km Ganga Marine Drive Project.

हिन्दी अनुवाद: बिहार कैबिनेट ने ₹70,000 करोड़ की लागत वाली 126 किमी लंबी गंगा मरीन ड्राइव परियोजना के व्यापक मास्टर प्लान को मंजूरी दी।

राज्य में निर्बाध सड़क संपर्क और पर्यटन विकास को नई गति देने के लिए गंगा नदी के समानांतर 126 किलोमीटर लंबे मरीन ड्राइव कॉरिडोर के विस्तार को प्रशासनिक स्वीकृति मिली है। यह परियोजना राजधानी पटना को आसपास के प्रमुख जिलों से जोड़ेगी और क्षेत्र में माल ढुलाई एवं यातायात भीड़ को कम करेगी।

English Headline: Bihar Department of Environment, Forest and Climate Change Initiates Geo-Spatial Wetland Conservation Mapping in Kosi-Gandak Belt.

हिन्दी अनुवाद: बिहार पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन विभाग ने कोसी-गंडक बेल्ट में भू-स्थानिक आर्द्रभूमि संरक्षण मैपिंग शुरू की।

उत्तर बिहार की संवेदनशील आर्द्रभूमियों (Wetlands) और पारंपरिक जल निकायों के पारिस्थितिकीय संरक्षण के लिए वन विभाग ने उपग्रह-आधारित रिमोट सेंसिंग सर्वेक्षण शुरू किया है। इसका उद्देश्य जल संचयन क्षेत्रों के अतिक्रमण को रोकना, जैव विविधता का संरक्षण और क्षेत्रीय भूजल पुनर्भरण को सुदृढ़ बनाना है।

SPORTS NEWS

English Headline: Neeraj Chopra Qualifies for Diamond League Finals 2026; Sets Sights on World Athletics Ultimate Championship.

हिन्दी अनुवाद: नीरज चोपड़ा ने डायमंड लीग फाइनल्स 2026 के लिए किया क्वालीफाई; वर्ल्ड एथलेटिक्स अल्टीमेट चैंपियनशिप पर टिकी निगाहें।

भारत के स्टार भाला फेंक (Javelin Throw) एथलीट नीरज चोपड़ा ने लगातार शानदार प्रदर्शन के दम पर प्रतिष्ठित डायमंड लीग फाइनल्स में अपनी जगह पक्की कर ली है। यह उपलब्धि अंतरराष्ट्रीय एथलेटिक्स सर्किट में भारत के निरंतर शीर्ष प्रदर्शन को रेखांकित करती है।

English Headline: International Table Tennis Federation (ITTF) Formally Deploys AI Sensor Tech for Ball Bounce and Edge Review in Global Circuit.

हिन्दी अनुवाद: अंतर्राष्ट्रीय टेबल टेनिस महासंघ (ITTF) ने वैश्विक सर्किट में बॉल बाउंस और एज रिव्यू के लिए एआई सेंसर तकनीक को औपचारिक रूप से लागू किया।

मैच के दौरान अंपायरिंग निर्णयों को सटीक और विवाद-मुक्त बनाने के उद्देश्य से आईटीटीएफ ने नई तकनीकी नियमावली लागू की है। टेबल के किनारों और बेसलाइन पर लगे उच्च-सटीक सेंसर सूक्ष्म संपर्कों का त्वरित विश्लेषण करके अंपायरों को त्रुटिहीन निर्णय लेने में सहायता करेंगे।

संकलन:-
शैलेन्द्र कुमार
प्रधान शिक्षक
रा.प्रा.वि. बोदसर,
बगहा-2, प. चम्पारण ।

✍️ संदेश:

"खबरें केवल वर्तमान का दर्पण नहीं होतीं, बल्कि वे भविष्य के अवसरों और चुनौतियों को समझने की दृष्टि प्रदान करती हैं। निरंतर पढ़ते रहें और जागरूक रहें।"

अनुभाग-6

प्रेरक बाल एकांकी

सावधानी ही सुरक्षा

(सुरक्षित शनिवार विशेष)

:

(दृश्य: विद्यालय का कक्ष। शिक्षक के सामने बच्चे बैठे हैं।)

शिक्षक: बच्चों, आज सुरक्षित शनिवार के तहत हम नाव दुर्घटना और डूबने से बचाव की बात करेंगे। नेपाल में हाल में अचानक आए भीषण सैलाब और हिमालयी क्षेत्र में ग्लेशियर टूटने की खबरें आई हैं। इसके बाद बिहार में भी गंडक से जुड़े इलाकों में प्रशासन ने सतर्कता बढ़ाई है।

रोहन: सर, क्या इसका पानी हमारे इलाके तक भी आ सकता है?

शिक्षक: खतरे की स्थिति नदी के जलस्तर और आधिकारिक चेतावनियों पर निर्भर करती है। इसलिए अफवाह पर नहीं, प्रशासन और आपदा प्रबंधन विभाग की सूचना पर भरोसा करना चाहिए।

अंश: अगर नदी का पानी बढ़ने लगे तो हमें क्या करना चाहिए?

शिक्षक: सबसे पहले नदी, नहर, तालाब और पुल के आसपास जाने से बचना चाहिए। तेज बहाव में नाव से यात्रा न करें। नाव लेना जरूरी हो तो लाइफ जैकेट पहनें और नाव में क्षमता से अधिक लोग न बैठें।

संकल्प: और अगर कोई पानी में गिर जाए?

शिक्षक: घबराकर स्वयं पानी में कूदना नहीं। तुरंत आसपास के लोगों को सावधान करें, प्रशासन या बचाव दल को सूचना दें और उपलब्ध सुरक्षित साधन से सहायता लें। बच्चों को अकेले बचाव अभियान नहीं चलाना चाहिए।

रोहन: यानी सावधानी पहले, साहस बाद में?

शिक्षक: बिल्कुल। बाढ़ में बहते पानी को पैदल या वाहन से पार करने की कोशिश भी खतरनाक है। सुरक्षित ऊँचे स्थान पर जाएँ और प्रशासन के निर्देशों का पालन करें।

सभी बच्चे एक साथ: हम नदी और बाढ़ के खतरे को खेल या रोमांच नहीं समझेंगे, अफवाह नहीं फैलाएँगे और सुरक्षा निर्देशों का पालन करेंगे।

शिक्षक: यही सुरक्षित शनिवार का उद्देश्य है—संकट आने का इंतजार नहीं, उससे पहले सावधानी और तैयारी।

.....✍️
मनोज कुमार
प्रधानाध्यापक
रा.म.वि.वाल्मीकिनगर
बगहा 2, प. चम्पारण।

आइए, हम मिलकर छात्रों के ज्ञान, प्रेरणा और जिज्ञासा को नयी दिशा दें। 🌿🙏

अनुभाग-7

लोक नृत्य "झारी"

चम्पारण की खास लोक संगीत/नृत्य "झारी"

बिहार के तराई और चंपारण की सोंधी माटी में सावन की फुहारों के बीच जब हवाएं सरसराती हैं, तो वहां की चौपालों और सड़कों पर गूंजने वाली छड़ियों की 'खट-खट' की ताल सिर्फ एक आवाज़ नहीं, बल्कि सदियों पुरानी सांस्कृतिक जीवंतता की धड़कन है। गुजरात के डांडिया या देश के अन्य हिस्सों के पारंपरिक लाठी नृत्यों के समकक्ष खड़ी यह स्वदेशी लोककला "झारी" कहलाती है, जो मुख्य रूप से श्रावण मास, नागपंचमी और कजरी के उल्लासभरे दिनों में अपनी पूरी ऊर्जा के साथ प्रकट होती है। यह नृत्य और गीत का एक ऐसा अनूठा संगम है जिसमें ग्रामीण समाज की सादगी, खेतों की महक और सामूहिक आनंद का असीम विस्तार समाहित है।

झारी की जड़ें चंपारण के कृषि समाज और श्रम-संस्कृति के बहुत गहरे में उतरी हुई हैं। ऐतिहासिक रूप से, धान की कठिन रोपनी के थकान भरे दिनों के बाद जब सावन की रिमझिम फुहारें वातावरण को सुहाना बनाती थीं, तब ग्रामीण युवा और किसान शाम ढलते ही चौपालों पर एकत्र होते थे। यह नृत्य उनके लिए केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि शारीरिक स्फूर्ति और मानसिक उल्लास का माध्यम था। इसमें जाति, वर्ग और उम्र के बंधन स्वतः टूट जाते थे और पूरा गांव एक गोल घेरे में आकर हाथ में मजबूत बांस की छड़ियां थाम लेता था। मौखिक परंपराओं के जरिए पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती यह लोक शैली भगवान शिव की बारात, कृष्ण-लीला, प्रकृति के सौंदर्य और लोक-नायकों के आख्यानों को अपने गीतों के जरिए जीवंत रखती आई है।

झारी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसकी पहचान केवल किसी एक समुदाय की सांस्कृतिक सीमा में बंद नहीं रही। उपलब्ध लोक-साहित्य संबंधी दस्तावेजों में पूर्वांचल की ऐसी परंपराओं का उल्लेख मिलता है, जिनमें हिन्दू समुदाय के लोग मुहर्रम के अवसर पर भी झारी गाते, ताजिया बनाते अथवा उसमें सहभागी होते रहे हैं। लोकरंग की सामग्री में इस साझा परंपरा का प्रत्यक्ष उल्लेख मिलता है और यह भी बताया गया है कि मुहर्रम में झारी लकड़ी के डंडों को बजाकर गाई जाती है। मुहर्रम की ऐतिहासिक-सांस्कृतिक स्मृति, विशेषकर हसन और हुसैन की कथा, संघर्ष और शहादत, लोकभाषा और लोकधुन के माध्यम से सामान्य ग्रामीण समाज तक पहुँचती है। कई जगह झारी गीतों में हसन-हुसैन को योगी के रूप में प्रस्तुत करने वाले लोकगीत का भी उल्लेख मिलता है।

इस लोक शैली की सबसे बड़ी खूबी इसका आंतरिक संगीत और अद्वितीय रिदम है। झारी में किसी बड़े, भारी या कृत्रिम वाद्य यंत्र की अनिवार्यता नहीं होती; कलाकारों के हाथों में लहराती छड़ियों का आपसी टकराव ही वह प्राकृतिक ताल पैदा करता है जो रोंगटे खड़े कर देने वाली ऊर्जा भर देता है। इसमें 'अगुआ' (मुख्य गायक) द्वारा उठाई गई लोकगीत की एक पंक्ति को घेरे में घूम रहे बाकी साथी 'पछुवा' (कोरस) के रूप में एक निश्चित ताल और तीव्र गति से दोहराते हैं। नृत्य की शुरुआत जहां एक धीमी, अनुशासित और संयत लय से होती है, वहीं जैसे-जैसे रात गहरी होती है, इसका टेम्पो (गति) इतना द्रुत और मत्त करने वाला हो जाता है कि दर्शक और कलाकार दोनों लोक-लय की एक अलग ही दुनिया में पहुंच जाते हैं।

विडंबना यह है कि आधुनिकता की अंधी दौड़, मनोरंजन के नए साधनों और पारंपरिक मेलों व चौपालों के सिमटते दायरे ने चंपारण की इस अनमोल थाती को आज विलुप्ति के मुहाने पर ला खड़ा किया है। राज्य के सांस्कृतिक मानचित्र पर इसे वह आधिकारिक पहचान और आदर नहीं मिल पाया जिसकी यह हकदार थी। इसके पारंपरिक गीतों, धुनों और नृत्यों के चरणों का कोई ठोस डिजिटल या लिखित दस्तावेजीकरण न होने के कारण यह कला अब चंपारण के कुछ सुदूर गांवों के बुजुर्गों की स्मृतियों तक सिमट कर रह गई है। यदि समय रहते इसे संरक्षित नहीं किया गया, तो आने वाली पीढ़ियां इस समृद्ध विरासत को केवल किंवदंतियों के रूप में ही जान पाएंगी।

बिहार के कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, स्थानीय प्रशासन, विश्वविद्यालयों, विद्यालयों और सांस्कृतिक संगठनों के सहयोग से यदि ऐसे प्रयास किए जाएँ तो झारी जैसी लोकपरंपराएँ केवल संग्रहालय की वस्तु बनने से बच सकती हैं। युवा पीढ़ी इन्हें डिजिटल माध्यम, लोक-मंच, वृत्तचित्र और शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से नए दर्शकों तक पहुँचा सकती है।

इस अनमोल लोक-विरासत को बचाने के लिए अब केवल चिंता व्यक्त करने का नहीं, बल्कि युद्धस्तर पर सार्थक पहल करने का समय है। बिहार सरकार के कला, संस्कृति एवं युवा विभाग को चाहिए कि वे राजकीय महोत्सवों, लोक-उत्सवों और पर्यटन सर्किट में झारी के पारंपरिक दलों को मंच और प्रोत्साहन प्रदान करें, ताकि कलाकारों को आर्थिक संबल भी मिल सके।

साथ ही, आज की Gen Z और युवा पीढ़ी से यह गंभीर आह्वान है कि वे अपनी जड़ों से कटने के बजाय इस स्वदेशी ताल को अपनी आधुनिक सांस्कृतिक पहलों, डिजिटल रील्स और फ्यूजन संगीत का हिस्सा बनाएं। जब तक युवा अपनी मिट्टी की इस अनूठी लय पर गर्व करना नहीं सीखेंगे, तब तक हमारी लोक-पहचान अधूरी रहेगी। झारी को बचाना केवल एक विलुप्त होती कला को पुनर्जीवित करना नहीं है, बल्कि अपनी उस सामूहिक सांस्कृतिक आत्मा को बचाना है जो हमें हमारी पहचान से जोड़ती है।

.....✍️
शैलेन्द्र कुमार
प्रधान शिक्षक
रा.प्रा.वि. बोदसर
बगहा-2, प. चम्पारण।

आइए, हम मिलकर छात्रों के ज्ञान, प्रेरणा और जिज्ञासा को नयी दिशा दें। 🌿🙏

"पाठक पृष्ठ"

दैनिक भास्कर — बेतिया भास्कर 06-04-2026

मंडे पॉजिटिव — सरकारी स्कूलों के शिक्षकों की टीम चंपारण ज्ञानाग्रह से मौन किंतु प्रभावी शैक्षिक क्रांति की बन रही साक्षी

चंपारण-ज्ञानाग्रह : बिहार के शैक्षिक पुनर्जागरण का आधुनिक शंखनाद, सरकारी विद्यालयों में ज्ञान की गंगा प्रवाहित हो रही

मणिकांत मिश्र | बेतिया

बिहार की ऐतिहासिक धरती, जो कभी नालंदा और विक्रमशिला के ज्ञानलोक से संपूर्ण विश्व को आलोकित करती थी, आज पुनः एक मौन किंतु अत्यंत प्रभावी शैक्षिक क्रांति की साक्षी बन रही है। इस वैचारिक क्रांति का ध्वजवाहक है चम्पारण-ज्ञानाग्रह। यह केवल एक दैनिक बुलेटिन या पीडीएफ श्रृंखला नहीं है, बल्कि टीचर्स ऑफ बिहार के समर्पित शिल्पकारों द्वारा गढ़ा गया एक ऐसा बौद्धिक अनुष्ठान है, जो राज्य के सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों के सरकारी विद्यालयों में ज्ञान की गंगा प्रवाहित कर रहा है। चम्पारण सत्याग्रह की पावन स्मृतियों से ऊर्जस्वित यह पत्रिका आज बिहार के हजारों विद्यालयों की प्रार्थना सभाओं का प्राण बन चुकी है। इस महती परियोजना के केंद्र में जिले के बगहा दो प्रखंड क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय बोदसर के प्रधान शिक्षक शैलेन्द्र कुमार का तपस्वी व्यक्तित्व है। उनके प्रधान संपादकीय और संकलन कौशल

"शिक्षक संवर्धन"

निष्कर्ष : दैनिक ज्ञानकोश बिहार के शैक्षिक परिदृश्य पर एक अमिट हस्ताक्षर बन चुका है

टीचर्स ऑफ बिहार- द चेंज मेकर्स के बैनर तले प्रकाशित यह पत्रिका यह सिद्ध करती है कि बिना किसी व्यावसायिक स्वार्थ या सरकारी वित्त पोषण के भी यदि संकल्प शक्ति दृढ़ हो, तो शिक्षा के क्षेत्र में युगांतरकारी परिवर्तन लाया जा सकता है। यह दैनिक ज्ञानकोश बिहार के शैक्षिक परिदृश्य पर अमिट हस्ताक्षर बन चुका है। चम्पारण-ज्ञानाग्रह केवल शब्दों का संकलन नहीं है; यह शैलेन्द्र कुमार व टीम के उस अटूट विश्वास का प्रतिबिंब है कि शिक्षक बदलेंगे, तो

शिक्षक संवर्धन खंड केवल सूचनात्मक लेखों का संग्रह नहीं, यह शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल व शिक्षण पद्धतियों के नवाचार का एक विमर्श मंच है। मनोज कुमार झा के लेखों में मनोविज्ञान, विद्यालय प्रबंधन व शैक्षिक चुनौतियों का जो विश्लेषण मिलता है। वह शिक्षकों को पारंपरिक ढर्रे से निकालकर आधुनिक शिक्षण की ओर प्रेरित करता है। यह खंड शिक्षकों को यह अहसास कराता है कि वे केवल कर्मचारी नहीं,बल्कि समाज के चेंज मेकर्स हैं। जब एक शिक्षक इस पत्रिका के माध्यम से नई शिक्षण विधियों,बाल मनोविज्ञान और नेतृत्व कौशल से लैस होता है,तो उसका सीधा लाभ कक्षा के अंतिम

हिन्दुस्तान

सामान्य बुद्धि के साथ सिलेबस ज्ञान बढ़ा रहा 'चंपारण ज्ञानाग्रह'

विशेष

■ चन्द्रभूषण शांडिल्य

बगहा। सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को कम समय से अधिक से अधिक जानकारी देने को नित नवाचार होते रहते हैं। ऐसा ही एक नवाचार बगहा के एक विद्यालय से शुरु हुआ जो आज करीब-करीब एक हजार विद्यालयों में फैलो किया जा रहा है। रोज प्रार्थना की घंटी बजने के बाद इसका वाचन होता है और बच्चों को नयी जानकारी मिलती है। हम बात कर रहे हैं 'चंपारण ज्ञानाग्रह' की। जिले के बगहा दो प्रखंड के मंगलपुर अवसानी पंचायत के राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय औसानी से रोज सुबह चंपारण ज्ञानाग्रह तैयार कर विभिन्न विद्यालयों के ग्रुपों में भेजा जाता है, जिसका उपयोग रोज किया जाता है। एनसीईआरटी की पुस्तकों से तैयार की गई प्रश्नोत्तरी का यह ज्ञानाग्रह बच्चों के सामान्य बुद्धि के साथ ही सिलेबस ज्ञान को भी बढ़ा रहा है। चंपारण ज्ञानाग्रह को बनाने वाले राजकीय प्राथमिक विद्यालय बोदसर

- चेतना सत्र के दौरान होता है इस प्रार्थना सभा सामग्री का
- गर्मियों की छुट्टी के दौरान शुरु हुआ चंपारण ज्ञानाग्रह, मिला टीचर्स ऑफ बिहार ग्रुप का साथ

01
सौ आठ अंक का हो चुका प्रकाशन

के प्रधान शिक्षक शैलेन्द्र कुमार ने बताया कि गर्मियों की छुट्टी के दौरान सोचा कि आखिरकार बच्चों से कैसे कनेक्ट रहा जाए तथा पढ़ाई के प्रति उनमें रुचि कैसे जगायी जाए। काफी विचार विमर्श के बाद प्रश्नों की श्रृंखला तैयार की, जिसका नाम रखा चंपारण ज्ञानाग्रह। इसको कुछ शिक्षा वाले ग्रुपों में शेयर किया रिस्पॉन्स अच्छा मिला। विद्यालय खुलने के बाद कई विद्यालयों में चेतना सत्र के दौरान उसका वाचन शुरू किया गया। आज हजार के करीब विद्यालय ऐसे हैं जो इसका उपयोग प्रार्थना सभा में करते हैं। अब तक इसके 108 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इसको एक बेहतर प्लेटफार्म उपलब्ध कराने में टीचर्स ऑफ बिहार ग्रुप ने दिया।

सामान्य विज्ञान से ज्ञान तक के प्रश्न होते हैं समाहित

चंपारण ज्ञानाग्रह के 108वें अंक में प्रश्न हैं, प्रकाश का प्रकीर्णन किसके कारण होता है। रक्त में यूरिया का उत्सर्जन कहां से होता है, तत्वों का वर्गीकरण किसने किया। विद्युत परिपथ में स्वीच का कार्य, पर्यावरण में प्राथमिक उत्पादक, मानव में पाचन एंजाइम का उदाहरण, चौरंगी के लेखक कौन हैं। इसके अतिरिक्त शब्द संगम, मुख्य समाचार, विदेशी समाचार, बिहार की खबर, खेल की समाचार और अंत में प्रेरक प्रसंग शामिल है।

'चंपारण-ज्ञानाग्रह' शिक्षकों के प्रयास से हर गांव तक पहुंची शिक्षा की नई अलख

संवाद सूत्र, जागरण। बगहा: बिहार की ऐतिहासिक ज्ञान परंपरा को नई ऊर्जा देते हुए बगहा अनुमंडल से एक सराहनीय शैक्षिक पहल सामने आई है। 'चंपारण-ज्ञानाग्रह' नामक दैनिक शैक्षिक पत्रिका आज सरकारी विद्यालयों में शिक्षा के स्वरूप को बदलने का कार्य कर रही है। बिना किसी बड़े बजट या सरकारी योजना के, शिक्षकों के सामूहिक संकल्प और समर्पण से यह पहल हजारों बच्चों के बौद्धिक और नैतिक विकास का माध्यम बन चुकी है। चम्पारण की ऐतिहासिक धरती से शुरू हुआ यह प्रयास अब एक शैक्षिक आंदोलन का रूप ले चुका है। विद्यालयों की प्रार्थना सभाओं में इस पत्रिका का उपयोग

- यह पत्रिका सरकारी विद्यालयों में बदल रही शिक्षा का स्वरूप
- शिक्षकों के सामूहिक प्रयास से तैयार हुई यह दैनिक पत्रिका

भाषा कौशल, समसामयिक घटनाओं और जीवन मूल्यों की जानकारी दी जा रही है। इससे शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित न रहकर व्यवहारिक और जीवनोपयोगी बन रही है। दूरदर्शी नेतृत्व में आकार ले रही इस पहल का नेतृत्व राजकीय प्राथमिक विद्यालय बोदसर बगहा दो के प्रधान शिक्षक शैलेन्द्र कुमार कर रहे हैं। उनके मार्गदर्शन में शिक्षकों की एक टीम रिन्टू कुमार, सौरभ कुमार,

प्रखंड संसाधन केंद्र बगहा दो • जागरण

राय, मनोज कुमार और मनोज कुमार झा प्रतिदिन पत्रिका का संपादन और प्रकाशन कर रही है। टीम द्वारा तैयार सामग्री विद्यार्थियों के स्तर के अनुरूप सरल, रोचक और प्रभावी होती है।

सप्तऋषि मॉडल से सर्वांगीण संरचना बहुआयामी है, जिसे 'सप्तऋषि मॉडल' के रूप में विकसित किया गया है। इसमें प्रार्थना सभा, सामान्य ज्ञान, भाषा विकास, 'आज का अखबार' और प्रेरक प्रसंग जैसे खंड शामिल हैं। यह मॉडल विद्यार्थियों के मानसिक, संतुलित रूप से आगे बढ़ाता है।

शिक्षक संवर्धन पर विशेष जोर: पत्रिका का 'शिक्षक संवर्धन' खंड शिक्षकों के निरंतर विकास पर केंद्रित है। इसमें आधुनिक शिक्षण विधियां, कक्षा प्रबंधन और बाल मनोविज्ञान जैसे विषयों पर लेख प्रकाशित किए जाते हैं, जिससे शिक्षक भी स्वयं को अपडेट रखते

> सरकारी विद्यालयों में इस प्रकार की नवाचारी पहल बच्चों के शैक्षिक वातावरण को समृद्ध करती है। चंपारण-ज्ञानाग्रह विद्यार्थियों के ज्ञान, अनुशासन और व्यक्तित्व विकास में सकारात्मक भूमिका निभा रही है। यह अन्य विद्यालयों के लिए भी प्रेरणास्रोत है।
>
> पूनम राय, बीईओ, बगहा दो

कैरियर मार्गदर्शन और जागरूकता: ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए पत्रिका में कैरियर मार्गदर्शन से जुड़े विषयों को भी शामिल किया गया है। इसके साथ ही स्वास्थ्य, आपदा प्रबंधन और सामाजिक सुरक्षा जैसे मुद्दों पर भी जागरूकता फैलायी जा रही है।

शिक्षा से बदलाव की दिशा: 'टीचर्स आफ बिहार—द चेंज मेकर्स' के बैनर तले संचालित यह पहल यह साबित कर रही है कि सीमित संसाधनों में भी बड़ा बदलाव संभव है। 'चम्पारण-ज्ञानाग्रह' अब केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि शिक्षा के माध्यम से समाज परिवर्तन का सशक्त

अनुभाग-8

"बिहार दर्शन : औरंगाबाद, अंक–3"

'संपादकीय'✍️

शीर्षक: औरंगाबाद: ऊर्जा आर्थिकी, सोन कृषि तंत्र और भावी विकास

औरंगाबाद की सांस्कृतिक समरसता का केंद्र देव के सूर्य कुंड, उमगा धाम के शैल-प्रांगण और सोन नदी के तटों पर बसता है। चैत्र और कार्तिक छठ महापर्व के दौरान देव में देश भर से आने वाले लाखों व्रतियों का समागम समूचे जिले को एक आध्यात्मिक सूत्र में पिरोता है। इसके साथ ही, दाउदनगर का ऐतिहासिक कालीन व कंबल उद्योग (Blanket Weaving) और पारंपरिक पीतल-कांस्य धातुशिल्प स्थानीय कारीगरों की पीढ़ियों पुरानी कलात्मक क्षमता और ग्रामीण भाईचारे को दर्शाता है।

आर्थिक और औद्योगिक मोर्चे पर औरंगाबाद बिहार की 'ऊर्जा राजधानी' के रूप में स्थापित है। नबीनगर में स्थित एनटीपीसी (NTPC) सुपर थर्मल पावर प्रोजेक्ट और भारतीय रेलवे की बिजली परियोजना (BRBCL) संयुक्त रूप से हजारों मेगावाट बिजली का उत्पादन कर पूरे राज्य और भारतीय रेल नेटवर्क को ऊर्जा सुरक्षा प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, जीटी रोड (NH-19) के किनारे वारिसलीगंज और बारुण में स्थापित बड़े सीमेंट निर्माण संयंत्र (जैसे श्री सीमेंट व डालमिया सीमेंट की ग्राइंडिंग यूनिट्स) जिले को निर्माण सामग्री का एक बड़ा केंद्र बनाते हैं।

कृषि और ग्रामीण आर्थिकी की बात करें तो औरंगाबाद सोन नहर प्रणाली (Son Canal System) के सघन नेटवर्क से लाभान्वित है। बारुण, ओबरा, दाउदनगर और हसपुरा के मैदानी इलाके उच्च गुणवत्ता वाले धान, गेहूं और दलहन की पैदावार के लिए जाने जाते हैं। यहाँ के सोन कछारों में उगाई जाने वाली हरी सब्जियां और तरबूज स्थानीय बाजारों के साथ-साथ झारखंड के औद्योगिक शहरों को ताजी आपूर्ति देते हैं, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में निरंतर नकद तरलता बनी रहती है।

ढांचागत विकास और रणनीतिक कनेक्टिविटी के मामले में औरंगाबाद का स्थान अत्यंत सुदृढ़ है। अमृतसर-दिल्ली-कोलकाता औद्योगिक गलियारे (ADKIC) और स्वर्णिम चतुर्भुज (NH-19) पर स्थित होने के कारण यह क्षेत्र लॉजिस्टिक्स, वेयरहाउसिंग और भारी उद्योगों के लिए आदर्श गलियारा बन चुका है। सोन नदी पर बने पक्के पुलों ने इसे शाहाबाद (रोहतास) के औद्योगिक क्षेत्र से सीधे जोड़ रखा है।

भविष्य के आर्थिक रोडमैप की बात करें तो औरंगाबाद में 'एग्रो-इंडस्ट्रियल पार्क्स' और 'सोलर व थर्मल हाइब्रिड एनर्जी' की असीमित संभावनाएं हैं। देव सूर्य मंदिर और उमगा की पुरातात्विक पहाड़ियों को जोड़कर यदि एक एकीकृत 'हेरिटेज व स्पिरिचुअल टूरिज्म सर्किट' विकसित किया जाए, तो यह स्थानीय युवाओं के लिए सेवा और आतिथ्य क्षेत्र में रोजगार के हजारों नए अवसर सृजित कर सकता है।

औरंगाबाद का यह अंतिम अंक यह प्रमाणित करता है कि यह जिला अपने प्राचीन सूर्य-उपासना के तेज और पुरातात्विक गौरव को सहेजे हुए आधुनिक ऊर्जा उत्पादन, भारी उद्योगों और कृषि सामर्थ्य के बल पर बिहार की प्रगति का एक प्रमुख आधार स्तंभ बना हुआ है। देव के पवित्र कुंड से लेकर नबीनगर की विशाल चिमनियों तक, सोन के लहलहाते खेतों से लेकर जीटी रोड की औद्योगिक हलचल तक—औरंगाबाद परंपरा और आधुनिक औद्योगिकीकरण का एक मजबूत मॉडल प्रस्तुत करता है।

.....✍️

शैलेन्द्र कुमार
प्रधान शिक्षक
रा.प्रा.वि. बोदसर, बगहा-2

Reg. No. BR/2025/0487469

"चम्पारण-ज्ञानाग्रह"

आइए, हम मिलकर छात्रों के ज्ञान, प्रेरणा और जिज्ञासा को नयी दिशा दें। 🌿🙏

Thank You..

बच्चों के हितार्थ अपना बहुमूल्य समय देने के लिए।

संपादक:-

शैलेन्द्र कुमार

'प्रधान शिक्षक'

Govt. PS बोदसर,

बगहा-2, प. चम्पारण।

(10010803702)

📱 -9939671700

अगर आपके मन में कोई नया विचार, कोई इवेंट, कोई एक्टिविटी या किसी बदलाव की पहल है, तो कृपया टीम में बताइए।

+917250818080

teachersofbihar@gmail.com

+917250818080

www.teachersofbihar.org